Pravara Rural Education Society's

Arts, Science and Commerce College,

Kolhar Tal. Rahata, Dist.- Ahmednagar- 413710

Affiliated to Savitribai Phule Pune University, Pune

Self Study Report: 2023 (2nd Cycle)

Criteria -3

Research, Innovations & Extension

Key Indicator: 3.3
Research Publication & Awards

Metric: 3.3.1 (QnM)

Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC care list during the last five years

Submitted to

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

BENGALURU

Index (2019-20)

Sr. No.	Title of paper	Name of the author/s	Name of journal	ISSN Number	Page No
1	Hindi Tatha Marathi Kavita ka Samkalin Paridrushya	Navale B.N	Shodh Sarita	2348-2397	03
2	Women Empowerment and their Rights in India	Auti P. S.	Our Hertage	0474-9030	09
3	Additive Free Greener Synthesis of 1,2-Disubstituted Benzimidazoles Using Aqueous Extract of Acacia concinna Pods as an Efficient Surfactant Type Catalyst	Kadu V. R.	Polycyclic Aromatic Compounds	1040-6638	15

GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/66766
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN 2348-2397

Special Issue

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 7 • Issue 25 • January to March 2020

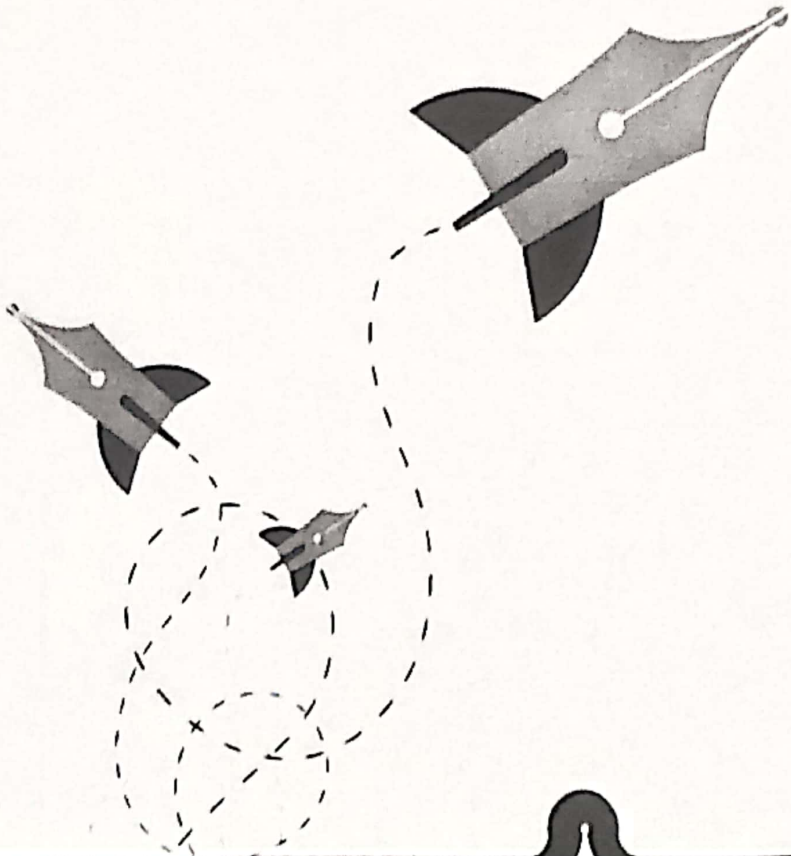

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

Scanned with OKEN Scanner

33.	राष्ट्रीय चेतना की सुलगती अभिव्यक्ति दक्खिनी काव्य	डॉ. हाशमबेग मिर्झा जावेद खलील पटेल	
34.	नागार्जुन के काव्य में जनवादी चेतना	प्रा. डॉ. छाया शंकर माळी	109
35.	समकालीन प्रमुख हिंदी गजलकारों की रचनाओं में जनचेतना के विभिन्न आयाम	प्रा. डॉ. संदीप जोतीराम किर्दत	113
36.	'धूमिल' के काव्य में जनचेतना	प्रा. डॉ. सौ. सविता शिवलिंग मेनकुदळे	115
37.	हिंदी तथा मराठी कविता का समकालीन परिदृश्य	डॉ0 भाऊसाहेब नवनाथ नवले	118
38.	चंद्रसेन 'विराट' की ग़ज़लों में व्यक्त आम आदमी	डॉ. शौकत अली सय्यद	121
39.	मायानंद मिश्र के कथा साहित्य में आंचलिकता एवं सामाजिक जनचेतना का स्वर	डॉ. रंजीत कुमार	125
40.	डॉ. महीप सिंह के उपन्यास में पारिवारिक, राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना	डॉ. सुनीता साह	128
41.	सुशिला टाकभौरे की 'सिलिया' कहानी में दलित चेतना	सुनंदा सोपानराव मोहिते	133
42.	समाकलीन हिंदी कविता : जनवादी संवेदना के नए स्वर	डॉ0 पंडित बन्ने	138
43.	जनवादीधारा का सशक्त कवि – नागार्जुन	डॉ. सुमा.टी.रोडन्नवर	141
44.	शम्बूक : आधुनिक विचारों का वाहक	प्रा. सिद्धाराम पाटील	144
45.	इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानी में धार्मिक चेतना	प्रा. सुधाकर इंडी	146
46.	हिंदी कविता में दलित चेतना के स्वर	डॉ. दीपक रामा तुपे	149
47.	चंद्रकांत देवताले की कविताओं में चित्रित मजदूरों की पीडा	डॉ. अशोक शेलार	152
48.	वेदनाओं का सफर : अल्मा कबूतरी	डॉ प्रकाश कोपार्डे	154
49.	मार्कण्डेय की कहानियों में ग्रामीण चेतना	प्रा० मनोज कांबले	158
50.	ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित चेतना	प्रा० उमेश बेलंके	161
51.	'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक मे संघर्षशील चेतना	प्रा. डॉ. बिराजदार गंगाधर धुळप्पा	166
52.	समकालीन हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. अनु पाण्डेय	170
53.	समकालीन भारतीय समाज में उदय प्रकाश की कहानियाँ	प्रा. युवराज राजाराम मुळये	172
54.	समकालीन काव्य में युग चेतना	प्रा. डॉ. विद्या शशीशेखर षिंदे	175
55.	नागार्जुन के कविता में जनपक्षधरता	डॉ. गुरुदत्ता	179
56.	प्रगतिशील साहित्य में दलित विमर्श : एक मूल्यांकन	डॉ. आबासाहेब राठोड	183
57.	ज़हीर कुरेशी के ग़ज़लों में मानवबोध	डॉ. प्रिया ए.	186
58.	समकालीन हिन्दी कविता के संदर्भ में एक विवेचन	डॉ. रमेश टी. बावनथड़े	190
59.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में जनचेतना के विविध आयाम	लक्ष्मी बाकेलाल यादव	193
60.	आधुनिक दांपत्य जीवन का यथार्थ : बिना दीवारों के घर	प्रा. एस. के आतार	196
61.	डॉ. रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित प्रगतिवादी चेतना	डॉ. जयलक्ष्मी एफ. पाटील	201
62.	निराला के काव्य में जनचेतना	प्रा. डॉ. रशीद तहसिलदार	203
63.	एक सड़क सत्तावन गलियाँ : नारी शोषण	डॉ. मा. ना. गायकवाड	206
64.	'बाबा नागार्जुन' की उपन्यासों में जनचेतना के विविध आयाम	प्रा. कैलास बबन माने	209
65.	समकालीन हिन्दी नाटकों में सामाजिक चेतना	प्रा. डॉ.अनिता वेताळ /अंत्रे	211
66.	बदलता भारतीय परिदृश्य : संत कबीर और उनका साहित्य	डॉ. संजय नाईनवाड	214
67.	स्त्री–चेतना का बदलता परिदृश्य : दलित उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. उमा देवी	217
68.	हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओ में अभिव्यक्त जीवन संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन	पार्वती भगवानराव देशपांडे	220
69.	आदिवासी साहित्य 'जारवा औरत के बहाने .....'	डॉ सुनिता मच्छिंद्र मोटे	224 227

Scanned with OKEN Scanner

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 25, January-March, 2020
Page Nos. 121-124

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

हिंदी तथा मराठी कविता का समकालीन परिदृश्य

❐ डॉ0 गाऊसाहेब नवनाथ नवले*

शोध सारांश

हिंदी तथा मराठी कविता का समकालीन परिदृश्य सामाजिक प्रतिबद्धता एवं संवेदनशीलता के साथ उद्घाटित होता है। वस्तुतः साहित्य की मूल संवेदना ही मानवीयता तथा जनहित की पुरजोर हिमायत करती है। हिंदी तथा मराठी कवियों ने किसान जीवन की त्रासदी को संवेदनात्मक धरातल पर अभिव्यक्त किया है। समकालीन हिंदी तथा मराठी कविता परिवेश एवं समसामयिक परिदृष्य को यथार्थ धरातल पर उद्घाटित करने में सफल रही है। राजनीतिक एवं शोषकों की साजिशों के प्रति समकालीन कविता में विद्रोह का स्वर प्रस्फुटित हुआ है। कहना गलत न होगा कि शोषितों के प्रति समकालीन हिंदी तथा मराठी कवियों एवं उनकी रचनाओं में पर्याप्त सहानुभूति का भाव दृष्टिगोचर होता है। श्रमिक एवं मजदूरों के प्रति हिंदी तथा मराठी कविता में आस्थापूर्ण अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। साथ ही दोनों भाषा–भाषी कवियों ने अभावग्रस्त जिंदगी एवं संघर्ष का चित्रण व्यापक धरातल पर किया है।

Keywords : तुलनात्मक, समकालीन, प्रतिबद्धता, संवेदना, मूल्य, अधिकार, शोषक, आजादी, श्रमिक, प्रगतिशील, अभावग्रस्त, व्यवस्था आदि।

प्रास्ताविक :

तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन वर्तमान समय एवं समाज की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बनी हुई है। हिंदी तथा मराठी साहित्य में सामाजिक प्रतिबद्ध साहित्य एवं साहित्यकारों का आरंभ प्राचीन काव्य से माना जा सकता है। हिंदी में जहाँ कबीर, मीरा, रविदास आदि कवियों का उल्लेख मिलता है, वहाँ मराठी साहित्य में नामदेव, चोखामेळा, ज्ञानेश्वर, समर्थ रामदास, तुकाराम, एकनाथ आदि ने सामाजिक न्याय एवं प्रतिबद्धता की पुरजोर हिमायत की है। उन्होंने दलित एवं पीड़ितों में प्रचलित अंधविश्वास, रूढ़ि–परंपरा तथा जातिभेद वाली मानसिकता को उजागर करते हुए सामाजिक मुक्ति, विसंगति एवं आडंबरों पर प्रहार किया है। समकालीन हिंदी तथा मराठी साहित्य, चाहे किसी दलित लेखक या दलितेतर लेखक द्वारा लिखा हुआ हो, उसकी मूल संवेदना का धरातल जनकेंद्रित होना चाहिए। इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि जहाँ कोई दलित लेखक अपनी अनुभूतियों को बेबाकी के साथ अभिव्यक्त करता है वहाँ दलितेतर लेखक से इन अनुभूतियों की अपेक्षा करना बेकार ही कहा जा सकता है। लेकिन ध्यातव्य बात यह कि वह किसी न किसी रूप में मानवीय संवेदना की नब्ज को लेकर ही प्रस्तुत होता है।

प्रस्तुत आलेख में मैंने समकालीन हिंदी तथा मराठी साहित्य के विषय एवं भाव पक्ष को केंद्र में रखा है। समसामयिक परिवेश एवं उराका राच्चापन, शोषकों की साजिशों का पर्दाफाश करने में समकालीन कविता की प्रतिबद्ध परिलक्षित होती है। कहना गलत न होगा कि समकालीन हिंदी तथा मराठी कविता मूल्यों की लड़ाई को अभिव्यक्त करती नजर आती है।

कृषक जीवन का यथार्थ :

किसान परिवार में जन्में मराठी भाषी कवि इंद्रजीत भालेराव ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता एवं न्याय की बुलंद आवाज का परिचय दिया है। 1975 के बाद मराठी ग्रामीण कविता को समृद्ध बनाने में आपका अवदान महत्वपूर्ण रहा है। दलित, पीड़ित किसानों के दर्द एवं व्यथा को वाणी देकर कवि ने व्यवस्था की पोल खोल दी है। 'टाहो' कविता संग्रह के कारण आपकी सामाजिक प्रतिबद्धता का विशेष पहलू उभरकर आता है – "शीक बाबा शीक लढायला शीक,/कुणब्याच्या पोरा आता लढायला शीक"[1] (सीख बेटा सीख लड़ना सीख,/कुणबे के बच्चे अब संघर्ष करना सीख) द्रष्टव्य पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि यहाँ कवि सामाजिक वैषम्य एवं उसके शिकार अभावग्रस्त परिवार की व्यथा को वाणी देता है। कवि गरीब किसान परिवार के बेटे से पढ़ने–लिखने की अपिल करते हुए अन्याय अत्याचारो को सहने की अपेक्षा शोषकों के खिलाफ आवाज बुलंद करते हुए लड़ने के लिए प्रवृत्त करता है। कवि को मालूम है कि पढ़ाई लिखाई से ही शोषण से छुटकारा मिल सकता है।

*अ

Scanned with OKEN Scanner

कुँवर नारायण 'आत्मजयी' में लिखते हैं–"कोई भी दुःख/मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं/वही हारा/जो लड़ा नहीं"[2] कहना गलत न होगा कि कुँवर नारायण उस व्यक्तित्व की हिमायत करते हैं, जो लड़ाकू है। वे यहाँ तक कह देते हैं हैं कि वही मनुष्य हारता है जो लड़ता नहीं है। यहाँ इंद्रजित भालेराव उस युवा को अभिव्यक्त करते हैं जो पढ़ाई के बूते पर लड़ाई के मैदान से अवगत हो जाए। कुँवर नारायण उसी आत्मविश्वास के साथ कह देते हैं कि कोई भी दुःख चाहे वह असीम भी क्यों न हो, वह अंततः साहस से बड़ा नहीं होता। कवि आगे आत्महत्या के शिकार परिवार के बेटे को संबोधित करते हुए कहता है– "कोटयावधी कर्ज घेती दलालाची पोरं/बुडविती त्याचा कधी करिती ना घोरं/तुला टाळून जाणाऱ्याला आडवायला शीक/घेतलेली कर्ज बुडवायला शीक"[3] (करोड़ों के कर्ज लेते बच्चे दलालों के/डूब भी जाए तो कभी चिंता नहीं करते/तुम्हें नजरअंदाज करने वाले को रोकना सीख/लिया हुआ कर्ज डूबाना सीख) सर्वेश्वर दयाल 'सक्सेना' की बहुआयामी दृष्टि भी उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का परिचय देती है। रोहिताश्व का मानना है कि "सर्वेश्वर अपनी प्रारंभिक रचनाओं में मध्यवर्गीय संवेदना और लोहियावादी आस्थाओं के कवि रहे हैं। वे परवर्ती काव्य–संरचना में प्रगतिशील कवि दृष्टि और नक्सलवादी चेतना के रचनाकार प्रमाणित होते हैं।"[4] कहना गलत न होगा कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का संवेदना पक्ष काफी सशक्त तेवरों के साथ उभरता है। कवि का प्रगतिशील होना ही कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता कही जा सकती है। जिसके माध्यम से वह स्वयं को व्यष्टि नहीं अपितु समष्टिहित की अपिल करता है।

'कुआनो नदी' में कवि की किसान विषयक दृष्टि का पता चलता है – "यह खेतिहर मजदूर भूख से मर गया।/यह चौपाए के साथ बाढ़ में बह गया।.../लू में टपक गया।/यह एक छोटे से रोजगार के सहारे,/जिंदगी काट ले जाना चाहता था।/पर जाने क्यों रेल से कट गया।"[5] द्रष्टव्य कथन से विदित होता है कि कवि ने अपनी प्रगतिशील सोच का परिचय देते हुए किसान की अभावग्रस्त जिंदगी का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है। दयनीय जीवन किसानों के जीवन का मानो अविभाज्य अंग बना है। किसानों की आत्महत्याएँ आज मात्र राजनीतिक आकर्षण का कारण बनी है। समकालीन मराठी साहित्य में किसानों की आत्महत्याओं पर काफी कविताएँ मिलती हैं, वहाँ समकालीन हिंदी कविता भी अपने विविध तेवरों के साथ प्रस्तुत होती है। जों कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता को बेबाक प्रस्तुत करती है।

शोषकों के खिलाफ आवाज तथा अधिकारों के प्रति सजगता :

मराठी साहित्य में वामन दादा कर्डक प्रतिभासंपन्न महाकवि के रूप में परिचित है। मराठी के समीक्षक डॉ. च.वि. जोशी का कहना है कि "पूँजीपति, उच्चवर्ग, विषमता, दलित एवं मजदूरों पर होता अन्याय एवं अत्याचार आदि को उन्होंने केंद्र में रखा है।"[6] कहा जा सकता है कि वामन दादा कर्डक ने समाज प्रबोधन तथा क्रांति की मशाल लेकर अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता का परिचय दिया है। 'वाटा' कविता में वामन दादा कहते हैं – "सांगा आम्हाला बिर्ला बाटा/टाटा कुठाय हो?/सांगा धनाचा साठा आमचा/वाटा कुठाय हो।"[7] (बताइए हमें बिर्ला बाटा/टाटा कहाँ है ?/बताओ धन के भंडार में हमारा/ हिस्सा कहाँ है?) प्रस्तुत काव्यपंक्तियों में कवि वामन दादा कर्डक ने आम जन की आवाज बुलंद करते हुए पूँजीपतियों पर प्रहार किया है। यह आवाज समाज के दलित, मजदूर एवं पीड़ित लोगों की है, जिनमें अपने अधिकारों के प्रति सजगता एवं चेतना का स्वर तो प्रखरता के साथ उभरकर आया है। सामान्य आदमी को मालूम है, हमारे अधिकारों का शोषण इने–गिने लोग ही करते हैं, संगठित होकर अपने अधिकारों एवं परिश्रम के मूल्य की माँग को वे सशक्त बनाते हैं। जिससे पूँजीपति एवं मिल–मालिकों की नींद अपने–आप खुल जाती है। मराठी में नागार्जुन ने इसी आशय एवं विषय को उजागर करते हुए अपनी समष्टि चेतना का परिचय दिया है।

जनतांत्रिक एंव राजनीतिक विकृतियों को उजागर करते हुए कवि नागार्जुन का मन व्यथित रहा है। वे जानते थे लोकतंत्र जहाँ जनता का राज नहीं है, पूँजीपति एवं तानाशाही मानसिकता जोर पकड़ती जा रही है। सामाजिक वैषम्य को अभिव्यक्त करते हुए नागार्जुन तत्कालीन राजनीतिक मानसिकता पर व्यंग्य प्रहार करते हैं– "खादी ने मलमल से अपनी सांठ–गांठ कर डाली है, बिड़ला–टाटा–डालमिया की तीसों दिन दिवाली है।"[8] कहना सही होगा कि कवि ने तत्कालीन राजनीति पर प्रकाश डाला है। जहाँ एक ओर आम जन दाने–दाने के लिए मुहताज होता था, वहाँ भारतवर्ष के पूँजीपति जिनके लिए दिवाली कोई महत्त्व नहीं रखती है। चाहे टाटा हो या बिरला या डालमिया उनके लिए हर दिन दिवाली है। कवि ने यहाँ सामाजिक विषमता की खाई को प्रस्तुत किया है।

आजादी पर व्यंग्य :

नामदेव ढसाल मराठी दलित लेखकों में अपनी लेखकीय प्रतिबद्धता के कारण जाने ही नहीं बल्कि माने भी जाते हैं। मराठी में नामदेव ढसाल ने स्वाधीनता की परिभाषा पर प्रश्न चिह्न लगाया है, वहाँ हिंदी में नागार्जुन की रचना में भी उसी स्तर पर व्यंग्य की अभिव्यक्ति हुई है। प्रगतिशील विचारों के वाहक के रूप में दोनों का व्यक्तित्व बेजोड़ कहा जा सकता है। 'गोलपिठा' की 'निमित्त 15 अगस्त 71' कविता में वे लिखते हैं– "पंधरा ऑगस्ट एक संशयास्पद महाकाय भगोष्ठ/'स्वातंत्र्य कुठल्या गाढवीच नाव आहे'/रामराज्याच्या कितव्या घरात आपण हातोत/उद्‌गम, विकास, उंची, संस्कार, संस्कृति/कंचा मूलभूत अर्थ स्वातंत्र्याचा"[9] (पंद्रह अगस्त एक संशयास्पद महाकाय

Scanned with OKEN Scanner

योनि/आजादी किस गधी का नाम/रामराज्य के कौन से घर में रहते हैं हम/उद्गम, विकास, स्तर, संस्कार, संस्कृति/इनमें से कौनसा मूलभूत अर्थ आजादी का) स्पष्ट है कि नामदेव ढसाल स्वाधीन भारत की संकल्पना पर ही प्रश्न चिह्न उठाते हैं। कवि स्वाधीनता के प्रति तथा व्यवस्था के प्रति घृणा प्रस्तुत करता है। देश के आजाद होने के उपरांत स्वाधीन देश से कुछ आशा–आकांक्षाएँ एवं उम्मीदें थीं लेकिन पूरे सपने चक्काचूर हो गए। यहाँ तक कि स्वाधीन भारत में मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना भी दुभर हुआ है। इसलिए कवि नामदेव ढसाल स्वयं को स्वाधीनता की परिकल्पना से अनभिज्ञ मानते हैं। नागार्जुन '26 जनवरी तथा '15 अगस्त' कविता में स्वाधीन भारत की पोल खोल देते हैं। वस्तुतः हम लोग राष्ट्रीय पर्व के रूप में 'गणतंत्र दिवस' तथा 'स्वाधीनता दिवस' धूमधाम से मनाते हैं लेकिन नागार्जुन का कहना है – "किसकी है जनवरी, किसका अगस्त है?/कौन यहाँ सुखी है, कौन यहाँ मस्त है ?/पब्लिक की पीठ पर बजट का पहाड़ है।/... सेठ ही सुखी है, सेठ ही मस्त है/मंत्री ही सुखी है, मंत्री ही मस्त है/उसी का है जनवरी, उसी का अगस्त है।"[10] कहना गलत न होगा कि यहाँ स्वाधीनतोपरांत निर्मित भयावह परिस्थितियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत हुआ है। जहाँ समाज का आम जन शोषण की चक्की की पाटों में पिसता जा रहा है वहाँ उनके लिए राष्ट्रीय पर्व का कोई औचित्य नहीं है। यहाँ कवि ने स्वार्थांध नेताओं की कूट मानसिकता पर प्रहार किया है।

श्रमिक एवं मजदूरों के प्रति आस्था :

मराठी के सिद्धहस्त कवि एवं मजदूरों के मसीहा नारायण सुर्वे ने अपनी अनुभूति को अभिव्यक्ति में बदल डाला है। उनका व्यक्तित्व प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचारधारा से ओत–प्रोत रहा है। इनकी कविता का वैचारिक एवं सामाजिक पक्ष निश्चित ही जनकेंद्रित है। आशावाद एवं जीजीविषा कवि का स्थायीभाव कहा जा सकता है। 'चार शब्द' शीर्षक कविता में वे कहते हैं– "रोजच्या रोटीचा सवाल रोजचाच आहे/कधी फाटकाबाहेर कधी फाटका आत आहे/कामगार आहे मी तळपती तलवार आहे/सारस्वतांनो! थोडासा गुन्हा करणार आहे.../एकटाच आलो नाही युगाचीही साथ आहे/सावध असा तुफानाची हीच सुरवात आहे।"[11] (हर दिन की रोटी का सवाल हर दिन उठता है/कभी गेट अंदर तो कभी गेट के बाहर/श्रमिक हूँ मैं तेजोमय तलवार हूँ/सारस्वतों ! थोड़ा–सा गुनाह करनेवाला हूँ/अकेला नहीं आया सदियाँ भी साथ है।/सँभल जाइए ये तूफान की शुरूआत है।") कहना सही होगा कि नारायण सुर्वे ने मुंबई के मजदूरों को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत किया है। मिल मालिक तथा पूँजीपतियों से होते शोषण को कवि ने अभिव्यक्त करते हुए मजदूरों की असहय मानसिकता से उपजी चेतना को भी वाणी दी है, जो शोषकों के लिए संकेत माना जा सकता है।

प्रगतिशील विचारधारा का बेबाक व्यक्तित्व जनकवि नागार्जुन ने समाज के गरीब, सर्वहारा, शोषित एवं पीड़ित समाज के दुःख को यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत किया है। सदियों से शोषित जनता की आवाज में ताकद भरते हुए 'काली माई' में वे लिखते हैं– "हम को क्या, हम तो यों ही पिसते आए हैं, भारती कल के पुर्जे हैं, घिसते आए हैं।/धनपतियों की खुशियों में खुश तुम भी रहना.../अस्सी प्रतिशत जनता की खातिर कृपाण है/बाकी लोगों की खातिर बस पुष्पबाण है।"[12] कहना गलत न होगा कि नागार्जुन ने पूँजीपति एवं धनपतियों की शोषक वृत्ति को उजागर किया है। लेकिन सामाजिक न्याय के पुरोधा बाबा नागार्जुन शोषित एवं उपेक्षित समाज को आश्वस्त करते हैं कि राष्ट्र या भविष्य के पुरोधा आप ही है। धनपतियों की साजिश एवं कूटनीति की पोल खोलकर नागार्जुन पाठकों को सोचने के लिए बाध्य करते हैं।

अभावग्रस्त जिंदगी एवं संघर्ष–चेतना :

समकालीन हिंदी कविता व्यवस्था के असीम शोषण, अत्याचार एवं दमन का विरोध करते हुए मानव मन में साहस निर्माण करने में अग्रस्थ रही है। मंगलेश डबराल 'पहाड़ पर लालटेन' में कवि शोषितों की विवश वाणी को तीखे तेवरों के साथ अभिव्यक्त करता है –"दूर तक एक लालटेन जलती है पहाड़ पर, एक तेल की आंख की तरह, टिमटिमाती धीरे–धीरे आग बनती हुई, देखों अपने गिरवी रखे हुए खेत, बिलखती स्त्रियों के उतारे गये गहने, देखो भूख, से, महामारी से मरे हुए, सारे लोग उभर आये हैं चट्टानों से दोनों हाथों से बेशुमार बर्फ फाड़कर, अपनी भूख को देखो, जो मुरतैद पंजे में बदल रही है, जंगल से लगातार एक दहाड़ आ रही हैं और इच्छाएं दांत पैने कर रही हैं।"[13] कहना सही होगा कि मंगलेश डबराल ने पहाड़ पर लालटेन जलाकर उपेक्षित एवं पीड़ित समाज की चेतना के बीज पहाड़ों पर बोए हैं, जिसे कवि आम जमीन पर उगते देखना चाहता है। कवि आजीवन शोषण की चक्की के पाटों में पिसते जन में क्रांति की ज्वाला प्रज्ज्वलित करना चाहता है। भले ही यह पहला चरण अवश्य है लेकिन कवि को उम्मीद है कि यही ज्वाला व्यापक धरातल पर प्रस्तुत होगी।

नई पीढ़ी के हस्ताक्षरों में मराठी के दलित विचारक डॉ. मनोहर जाधव का नाम महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। जिनका स्थायीभाव अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना तथा शोषित समाज को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत करना रहा है। 'कधी–कधी' रचना में वे लिखते हैं– "पाखरांनी मूळचे संदर्भ नाकारलेत/मागच्या पिढ्यांनी, बाभळीच्या झाडांशी केलेला करार,उधळून लावलाय/विद्रोहाचा ज्वालामुखी भडकतोय"[14] (पंछियों ने बुनियादी संदर्भों को नकार दिया है।/पिछली पीढ़ियों ने/बभूल के पेड़ों के साथ किए हुए अनुबंधों को ठुकरा दिया है/विद्रोह की ज्वालामुखी धधक उठी है) कहना सही होगा कि कवि ने उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व किया है जो नए सिरे से सामने

Scanned with OKEN Scanner

आ रही है जो पंछियों की तरह मुक्त सचार करना चाहती है। किसी सेठ, साहूकार तथा पूँजीपति के बंधनों को नकारती है। साथ ही इस पीढ़ी ने अपने पूर्वजों की लाचार जिंदगी को समझा है और अपने अधिकारों के प्रति वह सचेत नजर आती है। यहाँ तक कि वह अब शोषकों के खिलाफ विद्रोह करते हुए अपनी आवाज बुलंद कर रही है।

निष्कर्ष :

'हिंदी तथा मराठी कविता का समकालीन परिदृश्य' के विवेचन–विश्लेषणोपरांत जो तथ्य उभरकर आए हैं वे इस प्रकार हैं – समकालीन हिंदी तथा मराठी साहित्य में सामाजिक प्रतिबद्धता का स्वर समान रूप से दृष्टिगोचर होता है। जहाँ हिंदी के समकालीन कवियों ने विषय वैविध्य को केंद्र में रखा है वहाँ समकालीन मराठी कवियों की दृष्टि भी विषय पक्ष की हिमायत करती नजर आती है। हिंदी तथा मराठी का समकालीन साहित्य मात्र समाज का दर्पण नहीं है बल्कि वह नई पीढ़ी का पथ–दर्शक है जो सामाजिक विसंगतियों, विषमताओं एवं बारीकियों का लेखा–जोखा व्यापक यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत करता है। समकालीन हिंदी साहित्य में जहाँ बाबा नागार्जुन, मंगलेश डबराल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना तथा कुँवरनारायण आदि कवियों ने सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ी हैं वहाँ समकालीन मराठी रचनाकारों के तेवर भी काफी सशक्त परिलक्षित होते हैं। सामाजिक प्रतिबद्धता एवं सामाजिक न्याय की हिमायत करनेवालें रचनाकारों में नारायण सुर्वे, नामदेव ढसाळ, इंद्रजित भालेराव, वामनदादा कर्डक तथा मनोहर जाधव आदि नामों का उल्लेख प्रमुखतः किया जा सकता है।

समकालीन मराठी कविता में जहाँ किसानों की व्यथा का जिक्र अत्यधिक मात्रा में मिलता है वहाँ समकालीन हिंदी कविता में मजदूरों के शोषण को पर्याप्त मात्रा में वाणी मिली है। लेकिन ध्यातव्य बात यह कि समकालीन हिंदी तथा मराठी कविता ने अपने विषय पक्ष को व्यापक धरातल पर यथार्थ वाणी दी है। कहना राही होगा कि हिंदी तथा मराठी समकालीन कविता का मुख्य स्वर न्याय की लड़ाई रहा है। समाज के शोषक, पूँजीपति, राजनीति तथा व्यवस्था की समाजविघातक प्रवृत्ति एवं करतूतों की पोल खोलने तथा लेखा–जोखा प्रस्तुत करने में समकालीन हिंदी तथा मराठी कविता अपने सशक्त अंदाज के साथ प्रस्तुत हुई है इस सच्चाई को स्वीकार करना पड़ता है। अंततः कहा जा सकता है कि समकालीन मराठी कवियों की न्याय की लड़ाई के तेवर काफी विद्रोहात्मक परिलक्षित होते हैं, जबकि समकालीन हिंदी कवियों द्वारा लड़ी न्याय की लड़ाई में विद्रोहात्मक प्रवृत्ति सहज रूप में अभिव्यक्त हुई है।

सन्दर्भ :–

1. सं. डॉ. बाळासाहेब गुंजाळ – शीक बाबा शीक, काव्यकस्तुरी, पृष्ठ–9
2. कुँवरनारायण– आत्मजयी
3. वही, पृष्ठ –59
4. सं. डॉ. रतनकुमार पांडेय– अनभै, जनवरी–मार्च, 2005 पृष्ठ– 32
5. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – प्रतिनिधि कविताएँ, पृष्ठ–109
6. डॉ.च.वि.जोशी – काव्य कस्तुरी, पृष्ठ–53
7. सं. डॉ. बाळासाहेब गुंजाळ – काव्य कस्तुरी, पृष्ठ–65
8. नागार्जुन रचनावली–2, पृष्ठ–165
9. नामदेव ढसाळ – गोलपिठा, पृष्ठ–69
10. नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ–2, पृष्ठ–202
11. सं. कुसुमाग्रज – निवडक नारायण सुर्वे, पृष्ठ–1
12. नागार्जुन – काली माई
13. मंगलेश डबराल – पहाड़ पर लालटेन
14. डॉ. मनोहर जाधव – कधी–कधी, पृष्ठ–9

❐❐❐

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor - 6.8
ISSN- 0474-9030

International Multidisciplinary UGC CARE Listed Journal for Research Publication

OUR HERITAGE

PEER REVIEWED [REFEREED] INDEXED
UGC CARE LIST GROUP - B RESEARCH JOURNAL
VOL- 68, ISSUE-35, FEBRUARY -2020:
SPECIAL ISSUE ON MULTIDISCIPLINARY STUDIES

GENDER EQUALITY AND WOMEN EMPOWERMENT

LET US PROMOTE

Gender Equality &
Women Empowerment

Chief Editor
Dr. Ansari Md. Haroon Md. Ramzan
J.A.T Arts, Science & Commerce College
[For Women], Malegaon, Nashik.

Executive Editor
Dr. Lodhi Kaniz Fatma Niyaz Ahmad

Associate Editor
Dr. Salma Ab. Sattar

Scanned with OKEN Scanner

19	A New Woman In Oleander Girl	Dr.Kalyan Shidram Kokane	109-113
20	Women Empowerment And Their Rights In India	Dr. Lodhi Kaniz Fatma Niyaz Ah. Mr. P. S. Auti	114-120
21	Gender Equality And Women Empowerments	Prof. Dr.Jameelurrehman	121-126
22	Women Empowerment – Issues And Challenges	Dr. Malini Nair	127-130
23	Women Empowerments And Achievement	Dr.Mahjabeen Gulam Sultani	131-137
24	Shakuntala Devi – The Human Computer	Ms.Gawali P.D.	138-141
25	Women And Science	Dr. Ansari Farzanawahiduzzama	138-146
26	Women And Law Relating To Domestic Violence	Smt. Khune Shakuntala Kashinathrao	147-150
27	Women Anddomestic Violence Act, 2005	Dr. S. M. Devare	151-156
28	Women Empowerment In India	Ansari Abdullah Daniyal	157-160
29	Contribution Of Female Mathematician	Smt. S. R. Joshi	161-162
30	Women Empowerment Through Education And Other Perspectives	Dr. Pradnya Annarao Survase	163-166
31	Women Empowerment And Technology	Saimafirdous Mohammed Yaseen	167-169
32	Women In Changing India	Mr.Vithoba Pandit Khairnar	170-175
33	Feminist Perspectives On Women Empowerment: With Special Reference To Indian English Novelists	Mr.Gopikrishnaanantraoyelwatkar	176-178
34	Constitutional Provision Relating To Right Of Women Under Labour Legislation	Shri. Rakesh Arvind Bhosale	179-181
35	Role Of Women In Indian Sports	Prof. Sunita Desale	182-185
36	Status Of Women In India "Women Are The Ornaments Of Our Society"	Professor Sadiya Parveen Nehal Ahmad	186-190
37	Concept Of Women Empowerment	Dr. Mahesh Jaiwantrao Patil	191-195
38	Legal Framework Of Sexual Harassment Of Woman At Workplace In India	Vardhaman Vinayak Ahiwale	196-200

Copyright© 2020

Scanned with OKEN Scanner

OUR HERITAGE
ISSN: 0474-9030
Impact Factor – 6.8

Women Empowerment and their Rights in India

Dr. Lodhi Kaniz Fatma Niyaz Ahmed
Head, Dept. of Political Science
J.A.T. Arts,Scienceand Commerce
(For Women's),
Malegaon

Mr. P. S. Auti
Research Student (Ph.D.),
Dept. of Politics & Public Administration,
S.P.P.University, Pune
Email ID- autipandurang@gmail.com

Introduction:

Women's rights and issues have always been a subject of serious concern of academicians, intelligentsia and policy makers. From pastoral society to contemporary information and global society, the role of women has changed drastically. The role of a typical "Grihani" (house wife) who catered to all the requirements of the households including the rearing and upbringing of children in various sub roles of daughter, daughter-in-law, wife, mother, aunt etc. has been played quite efficiently. The continuity of changes in socio-economic and psycho-cultural aspects of human living has influenced the role of women. With the process of Industrialization, Modernization and Globalization showing its deep impact on the human society all over the world, the role and responsibilities of women has attained new definition and perspective. Further this has also led to addition of responsibilities and widened the role of women who also shares the financial responsibilities.

The women issues have received tremendous attention in the planning circle and in wide intellectual discussions and forums at national and global platforms. However the existing lacuna in the formulation and execution of the policies has not changed the grass root situation to a great extent. On the encouraging front, in the South Asian countries there have been relatively increasing economic participation in past one decade. Statistically the rate of literacy among women has also increased. The educational and occupational patterns have also changed and widened with women entering the domains, which till decade back was considered to be dominated by men. Further there has been encouraging rise in the percentage of the women joining service sector especially Banking and Information Technology. In the background of the gigantic transformation, the core issue, which still remains unanswered, is that of women's right and empowerment.

Empowerment:

Empowerment means that people - both women and men – can take control over their lives: set their own agendas, gain skills (or have their own skills and knowledge recognized), increase self-confidence, solve problems, and develop self-reliance. It is both a process and an

Copyright© 2020

Scanned with OKEN Scanner

outcome.

Meaning and Definition of Human Rights:

To quote A.J.M. Milne, "There can be no human community without rights. Having rights is what is to be a member of any community. A community necessarily consists of members who have rights and obligations. Unless there are members, there cannot be community. There has to be right if there has to be any social life. Thus, rights enable an individual with at least some of the elements of a place, an identity and a role, in the social milieu."

The Universal Declaration of Human Rights of 1948 has defined, human rights as: those minimum rights that every individual must have against the state and other public authority by virtue of being a member of human family irrespective of any other consideration. Those rights that is inherent in all citizens because of their human being. These are rights that are inalienable because the enlightened conscience of the community could not be permitted to surrender those rights by any citizen even of his/her own volition. These are the rights that are inviolable because they are not only vital for development and inflorescence of human personality for ensuring its dignity but also without them people would be reduced to the level of animals. Human rights are neither privileges not gifts given at the whim of a ruler or government. Neither can they be taken away by any arbitrary power. They cannot be denied no r can they be taken away or forfeited because an individual has committed an offence or a breach under any law. The word "right" not only implies "lawful entitlement", but also "a just entitlement". "Human rights" are rights everyone has virtue of their very humanity A.A. said, "Human rights are concerned with the dignity of individuals – the level of self esteem that secures personal identity and promotes human community." But Pla to and often said that human rights are those rights which are considered to be absolutely essential for the survival, existence and personality development of a human being. Hence it is summed up that human rights whether recognized or not belong to all human beings at all times and at all places. They are rights solely by virtue of being human irrespective of distinctions. It is the role of the state to uphold, promote and protect them in accordance with the existing statues established by law.

Development of Women Rights in India:

In India, and the United Nation's incorporated various provisions related to equality and dignity of women. The preamble of the Indian Constitution gives equality of status and opportunity to all the citizens of India. The 73rd and 74th Amendments in the Indian Constitution provide for reservation of seats for women in election to Panchayats and Municipalities It is indeed surprising to note that the Government took 16 years to give effect to the

Copyright© 2020

Scanned with OKEN Scanner

recommendations of the Committee for setting up a National Commission. The Commission has been entrusted to investigate and examine all matters relating to safeguards provided for women under the Constitution and under other laws, present a report to the Central Government. Making recommendations in such reports for the effective implementation of safeguards for improving the conditions of women by the Union or any state, reviewing of the existing provisions of the Constitution and other laws affecting women and recommending amendment so as to suggest remedial legislations, measures to meet any lacunae, inadequacy or shortcoming in such legislations. Taking up the cases of violations of constitutional provisions or other laws with the authorities for looking into complaints and taking suo-moto notices of matters relating to deprivation of women's rights, non-implementation of laws meant to provide protection to women and also to achieve the objectives of equality and development, non-compliance of policy decisions, guidelines or instructions aimed at instigating hardships, ensuring welfare and providing relief to women and taking up issues arising out of such matters with authorities, calling for special studies on investigations into specific problems or situations arising out of discrimination and atrocities against women and identifying the constraints so as to recommend strategies for their removal. Undertaking promotional research participating and advising on the planning process of socio –economic development of women, evaluating the progress of the development of women under Union and State, inspecting jails, remand Homes, and funding litigation involving issues affecting a large body of women and making periodical reports to the Government. Finally, with the introduction, recommendations, development and implementation of women's Human Rights in India still the rights of women are violated and they are in total darkness which has prompted the researcher to take up an analysis of the problems.

Important Constitutional and Legal Provisions for Women in India:

The principle of gender equality is enshrined in the Indian Constitution in its Preamble, Fundamental Rights, Fundamental Duties and Directive Principles. The Constitution not only grants equality to women, but also empowers the State to adopt measures of positive discrimination in favour of women. Within the framework of a democratic polity, our laws, development policies, Plans and programmes have aimed at women's advancement in different spheres. India has also ratified various international conventions and human rights instruments committing to secure equal rights of women. Key among them is the ratification of the Convention on Elimination of All Forms of Discrimination against Women (CEDAW) in 1993.

1. **Constitutional Provisions**

The Constitution of India not only grants equality to women but also empowers the State

Copyright© 2020

Scanned with OKEN Scanner

Conclusion:

Given the challenges women face in seeking their rights, it is more appropriate to promote grassroots women's rights and empowerment models while taking prevailing cultural and social conditions into account. These models provide useful and relevant frameworks for action and community participation and have the potential to have a great impact while minimizing any backlash that women may experience from asserting their individual rights or mobilizing as groups to claim their rights. Women's rights programs addressing issues such as gender-based violence could enhance their relevance and impact by combining their predominantly legal and "punitive" approaches with support and motivation for men to become primary partners and actors in promoting women's rights. Community-based approaches to address women's empowerment have the potential to influence and change, in real terms, women's subordinate status and to address the internalization and acceptance of gender-based violence and other rights violations that underpin women's vulnerability. These approaches, together with strategies that build on positive indigenous values and traditions that accord women respect in the community, endorse women's rights, and disapprove of gender-based violence, would facilitate broad-based participation of women, men, community-based organizations, and traditional and religious leaders in efforts to empower women.

References:

* Human Rights under the Indian constitution, P.L. Mehta and Neena verma (1999)
* Bajwa, G.S., Human Rights in India, Implementation and violation, (1995), Anmol Publications New Delhi
* Human Rights – Dr. U. Chandra
* J.C. Johari, Human Rights and New World order : Towards perfection of the Democratic way of Life, 1996, Anmol Publciations, New Delhi
* Siddiqui F.E Handbook on Women and Human Rights, (2001) (Guide for social Justice), Kanishka Publishers, 4697/5.21 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi, 110002.
* Human Rights watch world report 1993
* National Human Rights commission. Annual Report 1995.

Copyright© 2020

Scanned with OKEN Scanner

Polycyclic Aromatic Compounds

ISSN: 1040-6638 (Print) 1563-5333 (Online) Journal homepage: https://www.tandfonline.com/loi/gpol20

Additive Free Greener Synthesis of 1,2-Disubstituted Benzimidazoles Using Aqueous Extract of *Acacia concinna* Pods as an Efficient Surfactant Type Catalyst

Vinod R. Kadu, Hemant V. Chavan & Somnath S. Gholap

To cite this article: Vinod R. Kadu, Hemant V. Chavan & Somnath S. Gholap (2019): Additive Free Greener Synthesis of 1,2-Disubstituted Benzimidazoles Using Aqueous Extract of *Acacia concinna* Pods as an Efficient Surfactant Type Catalyst, Polycyclic Aromatic Compounds, DOI: 10.1080/10406638.2019.1670219

To link to this article: https://doi.org/10.1080/10406638.2019.1670219

Published online: 14 Oct 2019.

Submit your article to this journal

View related articles

View Crossmark data

Full Terms & Conditions of access and use can be found at
https://www.tandfonline.com/action/journalInformation?journalCode=gpol20

Scanned with OKEN Scanner

POLYCYCLIC AROMATIC COMPOUNDS
https://doi.org/10.1080/10406638.2019.1670219

Taylor & Francis
Taylor & Francis Group

Check for updates

Additive Free Greener Synthesis of 1,2-Disubstituted Benzimidazoles Using Aqueous Extract of *Acacia concinna* Pods as an Efficient Surfactant Type Catalyst

Vinod R. Kadu[a], Hemant V. Chavan[b], and Somnath S. Gholap[a#]

[a]Postgraduate Department and Research Centre, Padmashri Vikhe Patil College, Ahmadnagar, Maharashtra, India; [b]Department of Chemistry, ACS College, Satral, Ahmednagar, Maharashtra, India

ABSTRACT

An efficient environmentally benign method for the synthesis of 1,2-disubstituted benzimidazole derivatives via one-pot multicomponent has been reported using aqueous extract of *Acacia concinna* pods as a naturally occurring surfactant type catalyst. The present surfactant medium was found superior and additive free for the condensation of o-phenylene diamine and two equivalent of aldehyde to yield 1,2-disubstituted benzimidazole derivatives in excellent yields under mild conditions. A simple, economically viable and biocompatible catalytic system suggested the possible utility of the present protocol for the large scale construction of benzimidazole derivatives.

ARTICLE HISTORY
Received 4 July 2019
Accepted 17 September 2019

KEYWORDS
Acacia concinna; 12-disubstituted benzimidazoles; green methodology; multi-component reaction; natural surfactants

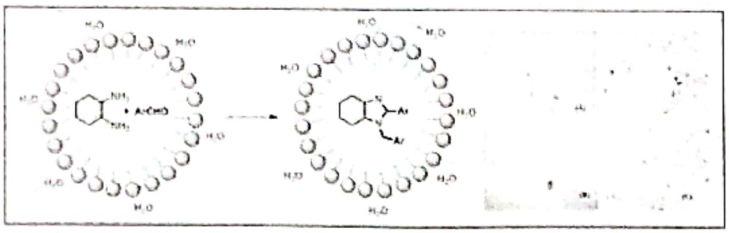

Introduction

The development of new catalytic systems originated from renewable sources has been enormously increasing to minimize environmental disturbance generated by the field of medicinal chemistry and production of fine chemicals. Moreover, new and efficient catalytic protocols are necessary to construct the promising classes of organic compounds for molecular and biomedical research. Nowadays, numerous natural and synthetic materials like supercritical solvent, ionic liquids, clays, enzymes and surfactants are extensively recognized as practical substitute to traditional synthetic procedures. These materials are found to be convenient to solve certain incredible synthetic problems concerning environmental aspects to some extent. In order to overcome the problems associated with existing catalysts such as environmental hazards, expensiveness, use of halogenated organic solvents, handling problems, use elevated temperature to get desired yield

CONTACT Somnath S. Gholap ssgholap2002@gmail.com Padmashri Vikhe Patil College, Pravaranagar, A/P-Loni kd, Rahata, Ahmadnagar 413713 Maharashtra, India
#Department of Chemistry, A. S. P. College, Devrukh, Ratnagiri, Maharashtra, India.
Color versions of one or more of the figures in the article can be found online at www.tandfonline.com/gpol.
© 2019 Taylor & Francis Group, LLC

Scanned with OKEN Scanner

of the required organic compound etc., natural sources are found to be the best remedy. Nature offers an incredible array of biochemicals providing unique class of potential biocatalysts useful for the reactions of various organic substrates.[1–3] The synthetic utility of these materials are biodegradable and generate less waste than the conventional methods. In addition, the emphasis of Green Chemistry is towards development of designing of chemical products and processes through pollution free and eco-friendly protocols.[4] In this context, the plant cell culture of *Daucus carota* root,[5–10] soaked *Phaseolus aureus* (green grams),[11] and coconut juice (*Cocos nucifera*)[12] has been successfully utilized as biocatalysts for selective reduction of ketones. In the previous reports, aqueous extract of *Acacia concinna* has been utilized for the synthesis of 3-carboxycoumarins and Cinnamic acids via Knoevenagel condensation,[13] acylation of amines,[14] and synthesis of aryl-hydrazones.[15]

In the field of medicinal chemistry, the benzimidazole core is one of the privileged substructures for drug design due to its affinity towards the broad range of enzymes and proteins.[16] It has been displayed remarkable potential against HIV, herpes (HSV-1), RNA, influenza, and human cytomegalovirus (HCMV) viruses.[17–21] Various benzimidazole derivatives are known to have topoisomerase, smooth muscle cell proliferation and angiotensin II inhibiting properties, selective neuropeptide YY1 receptor antagonists, 5-HT3 antagonists, antitumor, antimicrobial agents.[22–27] Some of the potentially active benzimidazole derivatives such as candesartan (A) plays an important role in AT1 receptors binding exhibiting stronger blood pressure lowering effect, azilsartan (B), is as AT1 receptor antagonist for the treatment of hypertension,[24] telmisartan (C) is an orally active potent AT1-selective antagonist discovered by Boehringer Ingelheim in 1991[28] astemizole (D), is a second-generation H1-receptor antagonist discovered by Janssen Pharmaceutica in 1977,[29] mizolastine (E) is a non-sedating antihistaminic drug[30] and clemizole (F) is first-generation antihistamine drug used against itching and allergic reactions[31] (Figure 1).

The traditional synthesis of benzimidazoles involves the reaction between an *o*-phenylenediamine and a carboxylic acid or its derivatives (nitriles, amidates, orthoesters) under harsh dehydrating conditions.[32] Very recently, a literature survey revealed several methods for synthesis of benzimidazole and its derivatives using L-proline,[33] glyoxalic acid,[34] $SiO_2/ZnCl_2$,[35] $Fe(ClO_4)_3$,[36] trimethylsilyl chloride,[37] silica sulfuric acid,[38] oxalic acid,[39] mesoporous metal oxide

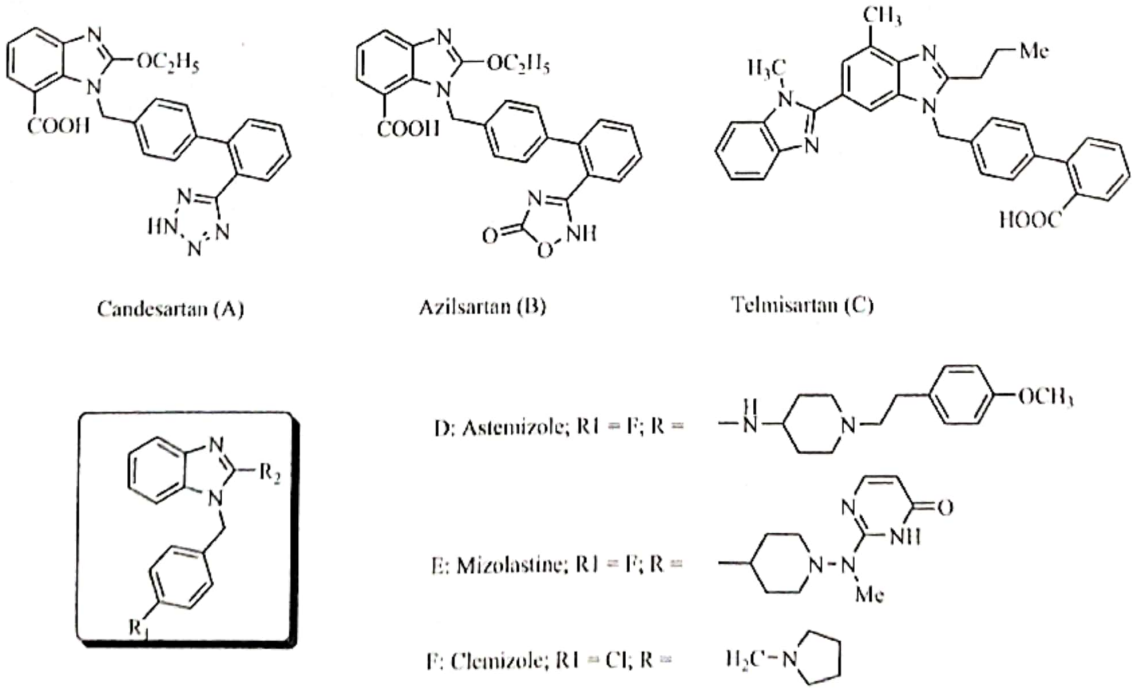

Figure 1. Some of the potentially active benzimidazole drugs.

Scanned with OKEN Scanner

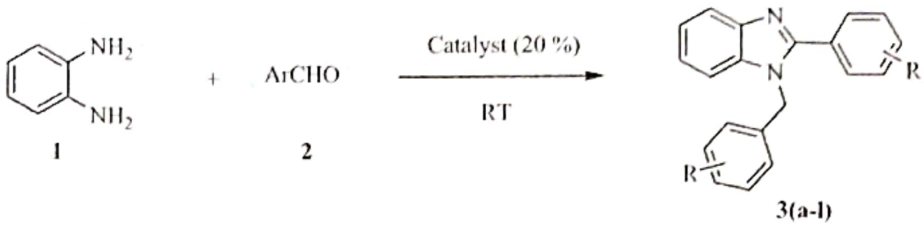

Scheme 1. Synthesis of 1,2-disubstituted benzimidazoles.

Table 1. Optimization of catalyst concentration.

Entry	Catalyst concentration %(W/V)	Time (min)	Yield (%)[a]
1	10	270	89
2	20	180	97
3	30	130	95
4	40	130	95
5	50	80	91
6	–	600	NR[b]

[a]Isolated yield of 3a.
[b]No reaction.

nanocrystals,[40] Indion 190 resin,[41] sodium dodecylsulfate–water,[42] nano-In_2O_3,[43] and alumina–sulfuric acid.[44]

Acacia concinna is commonly known as Shikakai which belongs to the family Leguminosae and found in tropical rainforests of southern Asia. The fruits of *Acacia concinna* are well known for its cleansing property and hence it is used as a traditional shampoo. The cleansing properties of *Acacia concinna* fruit are due to the presence of saponins, which are foaming agents. Saponins isolated from the plant fruits have been traditionally used as a detergent. In particular, these saponins produces leather when shaken in aqueous solutions due to presence of amphipathic glycosides composed of one or more hydrophilic glycoside moieties combined with a lipophilic triterpene cores. The fruit is known to have 10–11.5% saponins and their structure has been reported.[45,46] These saponins have surfactant properties similar to that of dodecyl benzene sulfonates.[47] The saponin 'acacic acid' was found in pods of *Acacia concinna*. Specifically, it is a trihydroxy monocarboxylic triterpenic acid of either tetracyclic or α-amyrin group. Hence, the aqueous extract of these pods of *Acacia concinna* shows acidic pH.[48,49] These fascinating properties of aqueous extract of *Acacia concinna* pods promoted us to use it as an efficient and eco-friendly acidic surfactant type catalytic medium for organic synthesis.

Result and discussion

In continuation of our ongoing research on development of novel synthetic method for biologically active compounds,[50–55] we have presented here a simple, cost-effective and green protocol for the synthesis of 1,2-disubstituted benzimidazole derivatives using aqueous extract of pods of *Acacia concinna* as a green and inexpensive reaction medium (Scheme 1). The present approach for the synthesis of benzimidazoles reduces the use of hazardous halogenated organic solvents, tedious reaction work-up, and drastic reaction conditions.

In order to check the efficiency of the catalyst, a reaction of o-phenylenediamine (**1**) (1 mmol) and benzaldehyde (**2a**) (2 mmol) in 5 mL aqueous extract of *Acacia concinna* pods (10% W/V) was performed at ambient temperature and we are fortunate to get an excellent yield of product **3a** (89%) after 270 min. Encouraged by the above outcome, the optimization of the reaction conditions was conducted by studying the same reaction in the presence of different concentrations aqueous extract of *Acacia concinna* pods. It was found that 20% of the catalyst was sufficient to

Scanned with OKEN Scanner

Table 2. Effect of surface tension of surfactant solution on rate of reaction.

Entry	Catalyst concentration %(W/V)	Surface tension, T (dyne/cm)	Time (min)
1	50	13.48	80
2	40	18.87	130
3	30	32.34	130
4	20	40.43	180
5	10	48.51	270
6	Distilled water	67.38	–

Table 3. Effect of surfactant for the formation of **3a**.

Entry	Surfactant[a]	Time (min)	Yield (%)[b]
1	None	600	NR[c]
2	SDS	120	60
3	DBSA	120	64
4	Triton X-100	120	51
5	CTAB	120	48
6	CPB	120	45
7	*Acacia concinna* extract 20% (W/V)	180	97

[a]Reaction condition: *o*-phenylenediamine (1 mmol), benzaldehyde (2 mmol), *Acacia concinna* extract (5 mL), room temperature.
[b]Isolated yield.
[c]No reaction.

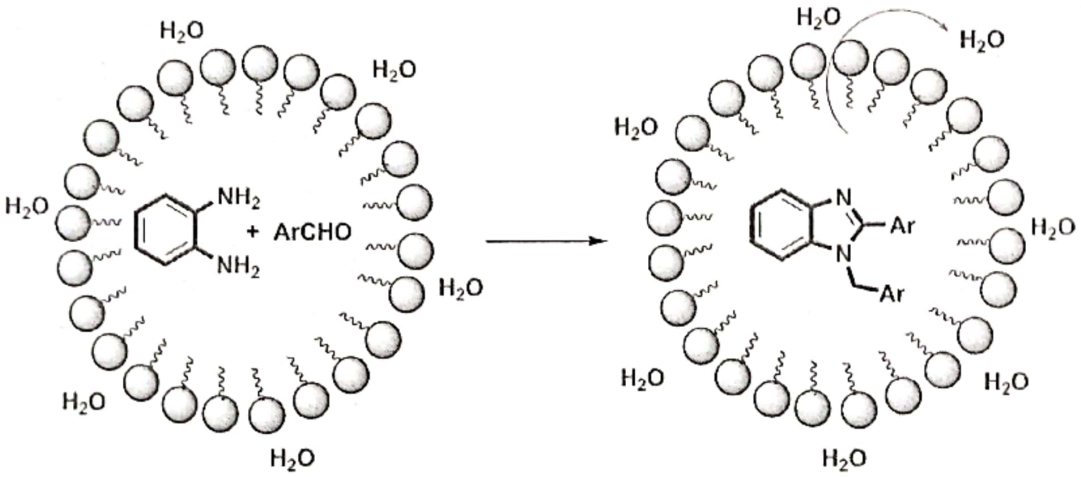

Figure 2. Micelle-promoted synthesis of 1,2-disubstituted benzimidazoles.

get highest yield of the product **3a** (97%) in short time (180 min). Increasing concentration of *Acacia concinna* pods (30%, 40%, and 50%) did not affect the yield of the final product. Therefore, 20% W/V aqueous extract of *Acacia concinna* pods and 5 mL volume was found to be the optimized amount of catalyst to push the reaction forward (Table 1).

As compared to distilled water aqueous solution of surfactant is found to reduce the surface tension of solution (Table 2) which increases the wetting and spreading properties. Surface tension and structure of surfactant governs the wetting and spreading characteristics.[56,57] A numerous reactions such as redox, photochemical, enzymatic, Diels-Alder, photochemical, etc. have altered the rate of reactions.[58] Micelle is collective of surfactant molecules in their aqueous solution. Hydrophilic groups of surfactant are sequestered in the micelle core.[59]

In order to evaluate the catalytic potency of the aqueous extract of the *Acacia concinna* pods, a model reaction of *o*-phenylenediamine (**1**) and two equivalents of benzaldehyde (**2**) was conducted in aqueous solutions of various cationic, anionic, and nonionic surfactants at room

Scanned with OKEN Scanner

underwent smooth to produce corresponding 1,2-disubstituted benzimidazole without any side product formation (Table 4, Entry 12 and 13). In general, all aromatic aldehyde undergo multi-component cyclocondensation afforded corresponding 1,2-disubstituted benzimidazoles. However, aliphatic aldehyde such as proanaldehyde and butyraldehyde unsuccessful to react under the present reaction conditions (Table 4, Entry 14 and 15).

The proposed mechanism for the synthesis of the 1,2-disubstituted benzimidazoles may involve the iminium-catalyzed formation of *N,N′*-dibenzylidene-o-phenylenediamine (**I**), activation by catalyst and ring closure giving a five-member ring (**II**) either in a sequential or a concerted manner (Scheme 2).[63]

Conclusion

In conclusion, we have described an efficient, economical, and environmental friendly catalyst for the synthesis of 1,2-disubstituted benzimidazole derivatives catalyzed by aqueous extract of *Acacia concinna* pods. The uses of water as reaction medium and biocompatible catalyst, short reaction time, high purity of the products, mild reaction conditions and a simple workup procedure are most the attractive features of the present method.

Experimental

General conditions

All chemicals were obtained from commercial suppliers and were used without further purification. The melting points were determined in open capillaries and were uncorrected. The solvents were dried and redistilled before use. Melting points were recorded on Digital Electro thermal Melting point apparatus (VEEGO, VMP-DS) and are uncorrected. Reaction monitoring was conducted using thin layer chromatography (TLC) using precoated silica gel $60F_{254}$ plates with layer thickness 0.25 nm purchased from Merck Ltd. TLC plates were visualized under ultraviolet light at 254 nm wavelength. IR spectra were recorded on KBr discs on Shimazdzu 470 IR spectrophotometer. ^{1}H-NMR was recorded on Varian-NMR mercury 300 MHz spectrometer in DMSO-d_6 using TMS as an internal standard. Chemical shifts values (δ) are expressed parts per million (ppm). Mass spectra were recorded on Varian MAT 311 A at 70 ev.

General procedure for the preparation of catalyst

A fine powder of *Acacia concinna* pods (20 g) in water (100 mL) was heated in a 250 mL conical flask at 100 °C for 20 min. The solid material was filtered and the aqueous extract was collected. The prepared extract has concentration 20% w/v.

General procedure for the synthesis of 1,2-disubstituted benzimidazole (3a–l)

A mixture of o-phenylenediamine (1 mmol) and aldehyde (2 mmol) in catalyst solution (20%, 5 mL) was stirred at room temperature for specified time (Table 3). After completion of the reaction (as indicated by TLC), a separated solid was filtered on Buchner funnel, washed with water and dried to obtain pure products[3] in excellent yields.

Scanned with OKEN Scanner

Spectral data

1-(4-Hydroxy-3-methoxybenzyl)-2-(4-hydroxy-3-methoxyphenyl)-1H-1,3-benzimidazole (3j)
M.P.: 184–186 °C;^{1}H-NMR (DMSO-d6, 300 MHz): δ 3.63 (3H, s, CH_3), 3.71 (3H, s, CH_3), 5.44 (2H, s, CH_2), 6.36–6.38 (1H, d,J = 6Hz, Ar-H), 6.64–6.69 (1H, d, J = 6Hz, Ar-H), 6.90–6.93 (1H, d, J = 6Hz, Ar-H), 7.18–7.25 (4H, m, Ar-H), 7.47 (1H, s, Ar-H), 7.76–7.77 (1H, d, J = 3.9 Hz Ar-H), 8.98 (1H, s, OH), 9.56 (1H, s, OH); LCMS (ESI): m/z 377 ($M+H^+$).

References

1. F. S. Sariaslani, and J. P. N. Rosazza, "Biocatalysis in Natural Products Chemistry," *Enzyme and Microbial Technology* 6, no. 6 (1984): 242–53.
2. F. Baldassarre, G. Bertoni, C. Chiappe, and F. Marioni, "Preparative Synthesis of Chiral Alcohols by Enantioselective Reduction with *Daucus carota* Root as Biocatalyst," *Journal of Molecular Catalysis B: Enzymatic* 11, no. 1 (2000): 55–8.
3. K. M. Koeller, and C. H. Wong, "Enzymes for Chemical Synthesis," *Nature* 409, no. 6817 (2001): 232–40.
4. V. Polshettiwar, and R. S. Varma, "Aqueous Microwave Chemistry: A Clean and Green Synthetic Tool for Rapid Drug Discovery," *Chemical Society Reviews* 37, no. 8 (2008): 1546–57.
5. Y. Naoshima, and Y. Akakabe, "Biotransformation of Aromatic Ketones with Cell Cultures of Carrot, Tobacco and Gardenia," *Phytochemistry* 30, no. 11 (1991): 3595–7.
6. Y. Naoshima, Y. Akakabe, and F. Watanabe, "Biotransformation of Acetoacetic Esters with Immobilized Cells of *Nicotiana tabacum*," *Agricultural and Biological Chemistry* 53, no. 2 (1989): 545–7.
7. J. S. Yadav, S. Nanda, P. T. Reddy, and A. B. Rao, "Efficient Enantioselective Reduction of Ketones with *Daucus carota* Root," *The Journal of Organic Chemistry* 67, no. 11 (2002): 3900–3.
8. J. S. Yadav, P. T. Reddy, and S. R. Hashim, "Efficient Synthesis of Optically Active 2-Azido-1-Arylethanols via Oxazaborolidine - Catalyzed Asymmetric Borane Reduction," Cheminform 31, no. 46 (2010): 1049–51.
9. A. Chadha, M. Manohar, T. Soundararajan, and T. S. Lokeswari, "Asymmetric Reduction of 2-Oxo-4-Phenylbutanoic Acid Ethyl Ester by *Daucus carota* Cell Cultures," Tetrahedron: Asymmetry 7, no. 6 (1996): 1571–2.
10. B. Baskar, S. Ganesh, T. S. Lokeswari, and A. Chadha, "Highly Stereoselective Reduction of 4-Aryl-2-Oxo but-3-Enoic Carboxylic Esters by Plant Cell Culture of *Daucus carota*," *Journal of Molecular Catalysis B: Enzymatic* 27, no. 1 (2004): 13–17.
11. G. Kumaraswamy, and S. Ramesh, "Soaked *Phaseolus aureus L.*: An Efficient Biocatalyst for Asymmetric Reduction of Prochiral Aromatic Ketones," *Green Chemistry* 5, no. 3 (2003): 306–8.
12. A. M. Fonseca, F. J. Q. Monte, M. da C. F. de Oliveira, M. C. de Mattos, G. A. Cordell, R. Braz-Filho, T. L. G. Lemos. "Coconut Water (*Cocos nucifera* L.)-A New Biocatalyst System for Organic Synthesis," *Journal of Molecular Catalysis B: Enzymatic* 57, no. 1 (2008): 78–82.
13. H. V. Chavan, and B. P. Bandgar, "Aqueous Extract of *Acacia concinna* Pods: An Efficient Surfactant Type Catalyst for Synthesis of 3-Carboxycoumarins and Cinnamic Acids via Knoevenagel Condensation," *ACS Sustainable Chemistry & Engineering* 1, no. 8 (2013): 929–36.
14. K. Mote, S. Pore, G. Rashinkar, S. Kambale, and A. Kumbhar, "*Acacia concinna* Pods: As a Green Catalyst for Highly Efficient Synthesis of Acylation of Amines," *Archives of Applied Science Research* 2, no. 3 (2010): 74–80.
15. D. M. Sirsat, and Y. B. Mule, "An Environmentally Benign Synthesis of Aryl-Hydrazones with Aqueous Extract of Acacia Pods as a Natural Surfactant Type Catalyst," *Iranian Chemical Communication* 91, (2016): 373–88.
16. R. S. Keri, A. Hiremathad, S. Budagumpi, and B. M. Nagaraja, "Comprehensive Review in Current Developments of Benzimidazole-Based Medicinal Chemistry," *Chemical Biology and Drug Design* 86, no. 1 (2015): 799–845.
17. J. S. Mason, I. Morize, P. R. Menard, D. L. Cheney, C. Hulme, and R. F. Labaudiniere, "New 4-Point Pharmacophore Method for Molecular Similarity and Diversity Applications: Overview of the Method and Applications, Including a Novel Approach to the Design of Combinatorial Libraries Containing Privileged Substructures," *Journal of Medicinal Chemistry* 42, no. 17 (1999): 3251–64.
18. M. J. Tebbe, W. A. Spitzer, F. Victor, S. C. Miller, C. C. Lee, T. R. Sattelberg, E. McKinney, and J. C. Tang, "Antirhino/Enteroviral Vinylacetylene Benzimidazoles: A Study of Their Activity and Oral Plasma Levels in Mice," *Journal of Medicinal Chemistry* 40, no. 24 (1997): 3937–46.
19. A. R. Porcari, R. V. Devivar, L. S. Kucera, J. C. Drach, and L. B. Townsend, "Design, Synthesis, and Antiviral Evaluations of 1-(Substituted Benzyl)-2-Substituted-5,6-Dichlorobenzimidazoles as Nonnucleoside

Scanned with OKEN Scanner